eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

भारतीय मनीषा और वैदिक ज्ञान–परम्पराओं की प्रतिश्रुतियाँ

[1]डॉ0 राजेश चन्द्र मिश्र
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य, हीरालाल रामनिवास स्ना0 महाविद्यालय, खलीलाबाद, संत कबीर नगर

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

वेद भारतीय संस्कृति के अनमोल धरोहर हैं और भारतीय ही क्यों, ये पूरी मानवीय संस्कृति के लिए अमूल्य निधि है। वेद उस काल के मानवीय सृजन है, जब मानव–सभ्यता अज्ञान के तिमिर को भेदकर ज्ञान के आलोक में अंगड़ाई ले रही थी। मानव की प्रभाती आँखों ने संसार की वैविध्यपूर्ण छवियों से पहली बार साक्षात्कार किया था। उसके कानों ने पहली बार सृष्टि का विविध अनुगूँजों को सुना था तथा उसे पहचानने के प्रयास किया था। इस प्रकार ज्ञान–ब्रह्माण्ड (Knowledge Cosmos) में वेद मनुष्य की पहली सशक्त एवं जिज्ञासु उपस्थिति है।

शब्द पूंजीः– भारतीय मनीषा, वैदिक ज्ञान–परम्पराएं, प्रतिश्रुतियाँ, मानवीय संस्कृति।

Introduction

वेद शेष–सृष्टि के साथ मानव के प्रथम अभिज्ञान के शब्द–बद्ध दस्तावेज हैं। इस कारण वेदों का ऐतिहासिक महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। प्राकृतिक दृश्यों के भव्य वर्णन और उनका सशक्त चित्रण अपने आप में अनूठा है। चाहे दिव्य सूर्योदय वर्णन हो या वर्षा वर्णन हो या फिर दामिनी की दिव्य–दमक का विलक्षण वर्णन हो, वैदिक साहित्य का कोई सानी नहीं है। क्षितिज से उठते आरक्त सूर्य की भव्यता से अभिभूत और अचंभित वैदिक ऋषिगण उल्लास और विस्मय से भर उठते थे। यही विस्मय और कुतूहल ही तो वैदिक ज्ञान परम्परा की नींव है। वैसे कॉलरिज के जुमले पर यकीन करें तो सारे ज्ञान की शुरुआत और अन्त विस्मय से ही होती है।

वेदों में हृदय के स्वाभाविक भाव हैं। इस कारण उसके विवरणों का साहित्यिक और धार्मिक महत्त्व भी है। लेकिन वेद सिर्फ इतना भर नहीं हैं। वे मानवीय प्रज्ञा के आरम्भिक गीत हैं, छन्द हैं, जिनमें महान द्रष्टा ऋषियों द्वारा शेष विश्व के प्रत्यभिज्ञान के साथ–साथ संसार की नाम वे रूपात्मक सत्ता से परे आध्यात्मिक अभिज्ञान का सार्थक प्रयास भी दिखता है। यह वास्तव में बड़े गौरव और हर्ष का विषय है कि भारतीय मनीषा की नींव में वेद जैसे महान् ग्रन्थ हैं। इनमें प्रस्तुत ज्ञान व विज्ञान ''धार्मिक विधान'' (रिलीजस टेस्टामैंट) न होकर, इस पृथ्वी पर मानव जीवन को चिरकालीन रूप में विकासरत रहने के लिए पारिस्थितिकी में अंगीभूत सह–अस्तित्व ;ब्व.मगपेजमदबमद्ध की व्याख्या प्रस्तुत कर हमारा मार्गदर्शन करते हैं। ये आदिकालीन ज्ञान के भण्डार सभी काल व समय के समाजों में उपयुक्त हैं, क्योंकि इनके निर्माण का आधार जागृत विज्ञान है। वेद जैसे महान ग्रन्थों की ही यह महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव है कि सत्य की अभिव्यक्तियाँ बहुत प्रबल होती हैं। यह इन वेदों का ही प्रस्तावना

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

था कि सच्चा ज्ञान पाने के लिए प्रत्येक मनुष्य को अपने तई विवेक यात्रा पर निकलना होता है। अस्तु प्रत्येक व्यक्ति को अपना सत्य और गंतव्य स्वयं ही तलासना होता है। इस प्रकार वेद अपने दैवी ज्ञान–आभा की आश्लिष्टता के बावजूद उस समय के विज्ञान, समाज, अर्थव्यवस्था और आध्यात्मिक अनुभूतियों को स्पंदित करते हैं। भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती ने आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में वेदों की महत्ता को प्रतिष्ठित करने का महान कार्य किया था। उन्होंने ब्राह्मण ग्रन्थों एवं मनुस्मृति के आधार पर वेदों की सृष्टि के आरम्भ में ''सकल मनुष्यों के हितार्थ परमात्मा के द्वारा अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा को प्रदत्त शब्दार्थ–सम्बन्ध युक्त ज्ञान मानते हैं और अपने पक्ष में मनु का प्रमाण देते हैं –

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्मा सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्धयर्थमृग्यजुस्सामलक्षमण।।(21/23)

वेदों में अभिव्यक्त ज्ञान–विज्ञान के तीन पक्ष हैं– (1) भौतिक, (2) आध्यात्मिक और (3) दैवीय। शुरू में तो भौतिक संस्कृति का पक्ष ही अधिक प्रबल था। इसका कारण यह था कि उस समय तक वेदों का धर्म–सत्ता के सन्दर्भ में प्रतिमानीकरण नहीं हुआ था। यदि कहीं कुछ ऐसा रहा भी हो, तो वह बहुत ही प्राथमिक और स्वैच्छिक था। कहने का आशय यह है कि आरम्भ में वेदों की सत्ता या इयत्ता का बाध्यकारी प्रभाव नहीं रहा होगा। लेकिन कालान्तर में इनका महिमामण्डन हुआ और इन्हें ब्रह्मवचन घोषित किया गया। इस प्रकार वेदों की अपौरुषेयता एवं अच्युतता को लोक जीवन में प्रतिष्ठित किया गया। इसके बाद क्रमशः वेदों के साथ सामाजिक और धार्मिक सत्ता का सन्दर्भ जुड़ता चला गया। वह निरन्तर सशक्त भी होता गया। अस्तु, वेद, धर्म और आस्था तथा तत्सम्बन्धी अनुशासन के केन्द्र बनते गये।

भारतीय आचार–विचार, जीवन–दर्शन और ज्ञान–विज्ञान पर एक लम्बे समय तक वेदों का वर्चस्व बना रहा। कहा जा सकता है कि भारतीय समाज और धर्म के क्षेत्र में वेद सुदीर्घ शास्ता रहे हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि भारतीय इतिहास के वृहत् कालखण्ड का बौद्धिक विमर्श इन्हीं महान पावन ग्रन्थों के इर्द–गिर्द रहा है। अनेक टीकाएँ व भाष्य वेदों को केन्द्र में रखकर हुए हैं। यह ध्यान देना होगा कि वेदों के समानान्तर या कई बार इनके प्रत्याख्यान के रूप में ज्ञान की अनेक शाखाएँ, प्रशाखाएँ व प्रतिशाखाएँ फूटीं। इस प्रकार वैदिक ज्ञान–विज्ञान की धाराओं और अन्तर्धाराओं के साथ–साथ इस महादेश में इसकी प्रतिधाराएँ भी फूटीं, इन सबमें वेदों की सशक्त बौद्धिक उपस्थिति को महसूस किया जाना चाहिए, क्योंकि ज्ञान के विकास की दिशा चाहे वेदोन्मुख हो, इसके विपरीत–प्रस्थान बिन्दु तो वेद ही रहे हैं। भारत में ज्ञानपूर्ण परिवेश सृजित करने में वेदों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसी ज्ञानयुक्त बौद्धिक परिदृश्य में वैदिक ज्ञान–विज्ञान पर आधारित संस्कृति का विकास तो होता ही है, साथ ही जैन, बौद्ध और आजीवकों की सशक्त ज्ञान परम्पराओं का भी विकास हुआ। इस प्रकार वेदों की गंगोत्री से विविधवर्णी ज्ञानगंगा निकलती हैं। इतनी विविधता इस कारण सम्भव हो सकी क्योंकि वेदों ने ही विविध ज्ञान–परम्पराओं, यहाँ तक कि विरोधी ज्ञान–परम्पराओं के विकास के लिए बहुत ही सहिष्णु, बहुलतावादी, लोकतांत्रिक स्पेस मुहैया करवा दिया था। इस तथ्य को पी0 शिवशंकर ने भी रेखांकित किया था। उनके अनुसार यह वेदों की ही अवधारणा है कि

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

ज्ञान मार्ग के प्रत्येक यात्री अनेक मार्ग का अनुसरण करने को स्वतंत्र हैं जब तक कि उसके दिमाग में उसका गंतव्य पूर्णतः स्पष्ट है। आखिर ''कर्तारः चतुर्वेदाः भण्डधूर्ताः निशाचरा'' कहने वाले प्रचण्ड भौतिकवादी चिन्तक चार्वाक भी इसी बौद्धिक परिवेश में पुष्पित और पल्लवित हुए।

भारतीय आधुनिकता के सन्दर्भ में जो लोग स्वामी दयानन्द सरस्वती की ऐतिहासिक उपस्थिति से परिचित होंगे, वे जानते होंगे कि किस प्रकार उन्होंने आधुनिकता के विविध भौतिक और मूल्यपरक उपादानों को वेदों में तलाश किया था। वेदों की ओर वापस लौटने का उनका प्रबल आह्वान, वही पुरानी दुनिया पुनः रचने से प्रेरित नहीं था। वह पश्चगामी सोच कत्तई नहीं रखते थे। वे वेदों के मूल्यों को आधुनिकता के आलोक में देख रहे थे। कहने का आशय है कि वे वस्तुतः आधुनिक मूल्यबोध के साथ एक नया भारत बनाना चाह रहे थे। अतीत की कोई भी धरोहर ठहरा हुआ नहीं होता है। उसकी अपनी गितिमानता होती है। जे0 कृष्णमूर्ति ने ठीक ही कहा है कि ''अतीत हमारी स्मृतियों का समुच्चय है। ये स्मृतियां वर्तमान सन्दर्भ में सक्रिय रहती ही हैं, किन्तु ये भविष्य के सन्दर्भ में अपेक्षाओं और आशंकाओं की जननी भी होती है।'' दयानन्द सरस्वती भी अतीत की इन्हीं स्मृतियों को आधुनिक ज्ञान–विज्ञान की रोशनी में सहेजना चाहते थे, ताकि नया भारत बनाने का एक मजबूत आधार मिल सके। अस्तु, यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि इस महादेश में आधुनिकता का दीया दयानन्द सरस्वती द्वारा वेदों के आलोक में ही लेसा गया और उससे तद्युगीन लोकजीवन को आलोकित किया गया।

वेदों में विज्ञान की बात करना कुछ लोगों के लिए शायद प्रतिगामी सोच हो। एक किस्म की अतीत जीविता हो, लेकिन ऐसा नहीं है। असल में आज का आधुनिक समय अपने विविध वैज्ञानिक उपादानों और मूल्यों के साथ हमारे दैनिक जीवन में निरन्तर घुलता–मिलता जा रहा है। ऐसी स्थिति में अतीत के पन्ने को वैज्ञानिक दृष्टि से पढ़ना आवश्यक हो जाता है। स्वयं ज्ञान की परम्पराओं के सन्दर्भ में ऐसा करना जरूरी है, क्योंकि जानना भी अन्ततः अतीत के सीढ़ीदार तहखाने में उतरना है। इसीलिए वैदिक संस्कृति की ज्ञान व विज्ञान की परम्पराओं को आधुनिक विज्ञान के आलोक में देखना जरूरी हो जाता है। इक्कीसवीं सदी के इस उत्तर–आधुनिक दौर में यह अहसास तीव्रतर होता जा रहा है कि प्रश्नाकुल psruk (Sprit of enquiry) को सिर्फ कुछ विषयों, कुछ क्षेत्रों या कुछ कालों तक ही सीमित करके मनुष्य का कल्याण नहीं किया जा सकता है। आज ज्ञान–विज्ञान को एक वृहद् सपेक्ट्रम प्रदान करने की जरूरत है, तो वैदिक ज्ञान परम्पराओं का क्षेत्र इससे अछूता क्यों रह जाय ?

संदर्भ सूचीः

1– जे0 आर्थर थामसन द्वारा 'इन्ट्रोडक्शन टू साइंस', प्रका0 होम यूनिवर्सिटी पुस्तकालय संस्करण, 1934, पृष्ठ–208 पर उद्धृत।
2– लेख : शिवेन्द्र कुमार पाण्डेय : संकलित 'हिन्दी में विज्ञान भावना' : सम्पादक– राय अवधेश कुमार श्रीवास्तव, पृष्ठ– 145, प्रका0 विश्व हिन्दी न्यास, 54, पैरी हिल रोड आसवीगो, न्यूयार्क, यू0एस0ए0, 2003
3– वेद और कुरआन : सम्पादक– मुहम्मद फारूक खाँ, मरकजी मक्तबा इस्लामी, दिल्ली, पृष्ठ– 12
4– भूमिका, पी0 शिवशंकर, 'वेदों का वैज्ञानिक अध्ययन', डॉ0 जे0के0 त्रिखा से उद्धृत।
5– जे0 कृष्णमूर्ति : 'अर्जेन्सी ऑफ चेन्ज', सम्पादक– मैरी ल्यूटिन्स, पृष्ठ– 56